ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

(शोध पत्रिका)

SANSKRITIK PRAVAH

Research Journal

Volume-3 No.1 February, 2016

Bi- annual Bi-lingual

A Multi Disciplinary Refereed Research Journal Dedicated to Socio-Cultural Harmony.

वसुधैव कुटुम्बकम्

संस्कृति समन्वय

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर

All India Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan

Subscription Rate

Institution & Library	-	Rs. 2200 (5 years)	Rs. 5100 (15 years)
Research Scholars/ Students Teachers / Others	-	Rs. 900 (5 years)	Rs. 2500 (15 years)
Single Copy	-	Rs. 125/-	

Subscription may be sent by cheques/drafts drawn in favour of
Editor, Sanskritik Pravah, Jaipur

The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and the **'Sanskritik Pravah'** accepts no responsibility for them.

Correspondence and Contact

सांस्कृतिक प्रवाह

803, वेदांग हाईट्स, नन्दपुरी, प्रताप सर्किल के पास,
प्रतापनगर, जयपुर-302033
e-mail : editorsprj@gmail.com
website : www.sisnet.co.in
Contact : 0141-2973369 (Off.), 094143-12288 (Chief Editor)
09414350711 (Editor)

Published by : Prof. Ashutosh Pant, Secretary
All India Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan (India)
803 Vedang Heights, Nandpuri, Pratapnagar, Jaipur-302033

Printed at : Kumar & Company, Jaipur

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

(शोध पत्रिका)

वर्ष 3 अंक 1 फरवरी, 2016

अर्द्धवार्षिक द्वि-भाषी

सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय के लिए
समर्पित एक बहु-विषयात्मक शोध पत्रिका

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान,

803, वेदांग हाईट्स, नन्दपुरी, प्रताप सर्किल के पास, प्रतापनगर, जयपुर-302033

Sanskritik Pravah

Patron

Sh. Ramprasad : Mentor & Guardian, Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur

Editorial Advisory Board

Prof. M. L. Chhipa : Vice Chancellor
A.B. Vajpeyi Hindi University, Bhopal (M.P.)

Dr. Kuldeep Chand Agnihotri : Vice Chancellor
Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala (H.P.)

Prof. Bhagirath Singh : Ex Vice Chancellor
Raffles University, Nimrana (Raj.)

Prof. P. K. Dashora : Vice Chancellor
Kota University, Kota (Raj.)

Prof. J. P. Sharma : Rtd. Professor & Head, Deptt. of Economic Admin. & Financial Management, University of Rajasthan, Jaipur

Prof. K.G. Sharma : Professor & Head, Deptt. of History & Indian Culture
University of Rajasthan, Jaipur

Padamshri Mujaffar Husain : Journalist & Vice Chairman, National Council for Promotion of Urdu Language, HRD Ministry, New Delhi

---

Chief Editor

Sh. Ram Swaroop Agrawal : Ex Principal, Govt. Law College,
Kota & Sriganganagar (Raj.)

Editor

Dr. Vinod Kumar Sharma : Associate Professor, Jyotish Vibhag
J.R. Rajasthan Sanskrit University, Jaipur

Managing Editor

Dr. Jagdish Narayan Vijay : Asstt. Registrar
J.R. Rajasthan Sanskrit University, Jaipur

Associate Editor

Dr. G. S. Gupta : Centre for Rajasthan Studies,
University of Rajasthan, Jaipur

Editorial Board

Prof. Ashutosh Pant : Director, S. K. Technical Campus, Sitapura, Jaipur

Dr. Sheela Rai : Associate Professor, Deptt. of Pol. Science,
University of Rajasthan, Jaipur

Dr. Sunil Asopa : Associate Professor, Deptt. of Law
J.N.V. University, Jodhpur

Dr. Premlata Swarnkar : Lecturer in Geography, Govt. Meera Girls College, Udaipur

अनुक्रमणिका/ CONTENTS

पृष्ठ संख्या

विनम्र श्रद्धांजलि 7

सम्पादकीय ... 8

1. यूरोप से भारतवंशियों के सम्बन्ध की तथ्यात्मक खोज में वंश-लेखकों की भूमिका 10
– डॉ. कुसुमलता केडिया

2. जीवन्त इतिहास: वंशावली-परम्परा 15
– डॉ. बी.एल. भाट

3. राजस्थान के लोक देवता सिद्धाचार्य श्रीदेवजसनाथ जी 22
– जानकी नारायण श्रीमाली

4. चैतन्य महाप्रभु: सामाजिक-धार्मिक उदारता व सामंजस्य के स्वर 34
– डॉ. गोपाल शरण गुप्ता एवं अमित कुमार रैंकवार

5. भारतीय मुसलमान : कल, आज और कल 41
– फारूख अहमद खान

6. भक्ति आन्दोलन एवं इस्लाम के अन्तर्सम्बंधों का ऐतिहासिक पुनरावलोकन 67
– डॉ. विजय कुमारी

7. भारत में मुस्लिम समुदाय : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 77
– डॉ. अलका अग्रवाल

8. British Policy Towards Minorities : Some Under Currents 85
– Dr. (Mrs.)Nidhi Sharma

9. शोध प्रारूप : राजस्थान का वंशावली साहित्य एवं वंशलेखक समाज – ऐतिहासिक विश्लेषण 92
– शोधार्थी : चेतना शर्मा

10. समसामयिक घटनाओं पर टिप्पणी 99
एक : दादरी कांड –एक पक्ष यह भी (डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री)
दो : दादरी बनाम मालदा और असहिष्णुता (रामस्वरूप अग्रवाल)

11. पुस्तक समीक्षा : मेवात का इतिहास और संस्कृति (मुंशी खां बालौत एवं पी.एस. सहारिया) 103
– डॉ. गोपाल शरण गुप्ता

12. गतिविधि 104

13. शोध पत्र के लिए मुख्य विषय 108

Contributors

1. **डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री**
   कुलपति, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला (हि.प्र.)

2. **डॉ. कुसुमलता केडिया**
   निदेशक, धर्मपाल शोधपीठ, भोपाल (म.प्र.)

3. **डॉ. विजय कुमारी**
   एसोशिएट प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

4. **फारूख अहमद खान**
   अध्यक्ष, साम्प्रदायिक सद्भावना एवं आतंक विरोधी समिति, जोधपुर (राजस्थान)

5. **जानकी नारायण श्रीमाली**
   राष्ट्रीय लेखक प्रमुख, अ.भा. इतिहास संकलन योजना, बीकानेर (राजस्थान)

6. **डॉ. गोपाल शरण गुप्ता**
   राजस्थान अध्ययन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

7. **डॉ. अलका अग्रवाल**
   व्याख्याता, राजनीति विज्ञान,
   महारानी श्री जया राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भरतपुर (राज.)

8. **डॉ. (श्रीमती) निधि शर्मा**
   व्याख्याता, इतिहास विभाग,
   राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटा (राज.)

9. **अमित कुमार रैंकवार**
   जूनियर रिसर्च फैलो,
   इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

10. **डॉ. बी.एल. भाट**
    वंशलेखक, बूंदी

11. **चेतना शर्मा**
    शोधार्थी : इतिहास विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

विनम्र श्रद्धांजलि

पणशीकर जी से अब मिलना नहीं हो पायेगा, न कोई चर्चा होगी, और न ही सरल शब्दों में परन्तु गहरी दृष्टि लिये उनका मार्गदर्शन मिलेगा। पिछले नवम्बर में उनका स्वर्गवास हो गया। उनका पहनावा तथा रहन-सहन अत्यन्त सादगीयुक्त था परन्तु गहन परिश्रम, लगन एवं चिन्तन उनके स्वभाव में थे। यही कारण है कि आज देश भर में जागरण कार्य का प्रभावी विस्तार हुआ है। देश को तोड़ने वाले अत्यन्त घातक 'मतान्तरण' पर थोड़ी ही क्यों न हो, रोक लगी है तथा समाज से बिछड़े बन्धु पुन: लौटने लगे हैं।

नवाचारों तथा अधुनातन तकनीक के उपयोग के प्रति उनकी दृष्टि सहज थी। वे इनका हमेशा स्वागत ही करते थे। सामाजिक अध्ययन एवं शोध को समर्पित अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान की स्थापना के विचार को प्रारम्भ से ही मा. पणशीकर जी का आशीर्वाद मिला। विभिन्न जनजातियों के समस्त पहलुओं का प्रलेखीकरण करने का कार्य हो या वंशावली विधा को पुनर्जीवित करने का कार्य, साहित्य निर्माण की बात हो या शोध-पत्रिकाओं के प्रकाशन की बात रही हो या फिर सेमिनार आयोजन की बात, मा. पणशीकर जी का साथ हमेशा मिलता रहा। संस्कृति समन्वय के किसी बड़े आयोजन में मा. पणशीकर जी न रहे हों, ऐसा याद नहीं पड़ता।

'सांस्कृतिक प्रवाह' में प्रकाशित सामग्री के लिए हमें उनकी सराहना एवं मार्गदर्शन मिलता रहा। वे बड़े चाव से शोध पत्रिका के प्रत्येक अंक का अध्ययन व निरीक्षण कर अपने सुझाव देते थे। पणशीकर जी चाहते थे कि 'सामाजिक समरसता' व अन्य विषयों पर प्रामाणिक जानकारी सहेजे हुए सांस्कृतिक प्रवाह के विशेष-अंक निकाले जावें।

वे आजन्म अविवाहित रहते हुए अपना सम्पूर्ण समय लगाकर समाज को संगठित करने का कार्य करते रहे। उनकी दृढ़ संकल्प शक्ति, कठोर परिश्रम, व अचूक दृष्टि से सभी प्रभावित थे। उन्होंने वनवासी घुमन्तु व वंचित वर्ग की समस्याओं का समाधान निकालने का प्रयत्न किये।

माननीय पणशीकर जी इस देश पर हो रहे 'जनसंख्या आक्रमण' से चिन्तित थे। उनके अनुसार मतान्तरण की समस्या किसी विशिष्ट जाति, जनजाति की न होकर सम्पूर्ण समाज की है। अत: इसके समाधान हेतु भी बुद्धिजीवी वर्ग तथा शासन-प्रशासन के साथ ही सर्वसामान्यजन को भी अपनी भूमिका निभानी होगी।

सांस्कृतिक प्रवाह के संरक्षक रामप्रसाद जी ने मा. पणशीकर जी के लिए ठीक ही कहा है कि 'वे सही मायने में Man of Mission, Man of Vision तथा Man of Action थे।'

सांस्कृतिक प्रवाह शोध पत्रिका की ओर से श्रद्धेय मुकुन्दराव आत्माराम पणशीकर जी को भावभीनी श्रद्धांजलि।

– मुख्य सम्पादक

सम्पादकीय

जे एन यू प्रकरण

यदि कुछ युवा, जिस देश में वे रह रहे हैं उसी को बर्बाद करने के लिए युद्ध लड़ते रहने का नारा लगायें, अपने ही देश के टुकड़े होने का नारा लगायें, तो इससे ज्यादा गंभीर और चिंता की बात कुछ हो सकती है क्या? दुनियाँ के किसी भी देश में आज तक ऐसा नहीं हुआ है। भारत में हुआ, तो यह सभी राजनैतिक दलों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, यहाँ तक कि सभी नागरिकों के लिए अत्यन्त चिंता वाला विषय होना चाहिए था। टी.वी. चैनल्स पर जब इस प्रकार के नारे सुने तो दिल धक् से रह गया, मानो किसी ने दिल पर हथौड़ा मार दिया हो। ''तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें ना रहें'' - यह कामना रहती है प्रत्येक नागरिक की। देश का प्रधानमंत्री कोई भी हो, किसी भी दल की सरकार हो, यह देश तो सबका है। यह देश ही बर्बाद हो गया तो हम सब कैसे सुखी रहेंगे?

यह ठीक है कि नारे लगाने से ही देश बर्बाद नहीं होता। परन्तु कुछ युवाओं ने अपने ही देश को बर्बाद करने के नारे हवा में उछाले। यह अचानक नहीं हुआ होगा। इसके पीछे निश्चित रूप से गहरी साजिश रही होगी। महीनों की तैयारी होगी। देश विरोधी ताकतों का साथ होगा। तो यह सबकी चिंता का विषय होना चाहिए।

जेएनयू छात्रसंघ अध्यक्ष कन्हैया ने देशद्रोही नारे लगाये या नहीं, यह विवादित हो सकता है, परन्तु वह उस अवैध व राष्ट्र विरोधी भीड़ का एक हिस्सा अवश्य था। इसलिए गिरफ्तारी पर वह सहानुभूति का हकदार तो कतई नहीं है। हाँ, उसके अपराध व अपराध की सीमा का निर्धारण न्यायपालिका करेगी। परन्तु कैसा दुर्भाग्य! देश में कैसा वातावरण बना दिखाई दिया?

अनेक राजनैतिक दल व कई टी.वी. चैनल्स प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से देशद्रोही नारे लगाने वालों के साथ खड़े दिखाई दिए। इससे ज्यादा इस देश का दुर्भाग्य क्या हो सकता है? यह तो स्वार्थ एवं वोटों की राजनीति की पराकाष्ठा है। अपने स्वार्थ के लिए तथा अपने विरोधी सत्तारूढ़ दल को घेरने के लिए 'देश की बर्बादी तक-जंग रहेगी, जंग रहेगी' तथा 'भारत तेरे टुकड़े होंगे- इंशा-अल्लाह, इंशा अल्लाह' के नारे लगाने वालों के साथ खड़े हो रहे हैं। उनका बचाव करते दिखाई दे रहे हैं। चिंता इसकी होती रही कि कन्हैया ने नारे नहीं लगाये तो गिरफ्तारी क्यों? चिंता इसकी नहीं थी कि भारत की बर्बादी के नारे लगाये गये।

इस घटनाक्रम का दूसरा पहलू भी है। कन्हैया को न्यायालय में प्रस्तुत करते समय कुछ उत्तेजित लोगों ने उसके साथ मारपीट व धक्कामुक्की की। सोचें तो कुछ हद तक यह अस्वाभाविक भी नहीं था।

चोरी करते या दुष्कर्म करते पकड़े जाने पर भीड़ का ऐसा ही व्यवहार कई बार दिखाई देता है। यह तो देशद्रोह का मामला था। फिर भी, कानून को हाथ में लेने का अधिकार किसी को नहीं है। इसलिए कन्हैया की रक्षा पुलिस को करनी थी तथा उसके साथ मारपीट करने वालों पर कार्रवाई भी। लेकिन क्या उन वकीलों (या वकीलों की वेश भूषा पहने लोगों जैसा कि कन्हैया ने वर्णन किया है) का अपराध जेएनयू में देश को बर्बाद करने व देश के टुकड़े करने के नारे लगाती भीड़ के अपराध से बड़ा हो गया? तथाकथित धर्मनिरपेक्ष लोग जेएनयू की घटना की निंदा करने के बजाय कन्हैया पर हमले की निंदा करते दिखे। उस घटना के विरोध में लामबंद होते दिखे। दिल्ली की सड़कों पर उन्होंने जेएनयू की घटना के विरोध में जुलूस नहीं निकाला। वे उस घटना का प्रभाव खत्म करने तथा सरकार को घेरने के लिए रोहित बेमुला व कन्हैया के मामले पर जुलूस निकालते दिखे। हत् भाग्य देश का। जेएनयू के प्राध्यापक-प्रोफेसर्स का संगठन भी देशद्रोही नारे लगाने वाले छात्रों के साथ दिखाई दिया। उनकी ओर से माँग रखी गयी कि देश की बर्बादी के नारे लगाने वालों पर कोई आपराधिक धारा न लगायी जाये। वाह रे गुरुओं! क्या सिखा रहे हो अपने विद्यार्थियों को? क्या ऐसे भारत के लिए भगतसिंह, सुखदेव, अशफाखउल्ला जैसे हजारों युवा फाँसी पर झूल गये थे।

कन्हैया के साथ मारपीट की घटना को एक टी.वी. चैनल (NDTV) ने तो अभिव्यक्ति की आजादी एवं संविधान के विरूद्ध इस कदर माना कि एक दिन उन्होंने अपने चैनल पर दृश्य (Visuals) नहीं दिखाये, केवल एंकर की आवाज ही दर्शकों को सुनायी देती रही तथा जो बोला जा रहा था वहीं टी.वी. स्क्रिन पर लिखा हुआ दिख रहा था। एंकर रविश कुमार घोषणा करते रहे कि आपका टी.वी. ठीक है, हम ही दृश्य आपको नहीं दिखा रहे हैं ताकि आप महसूस कर सकें कि कन्हैया के साथ कितना बड़ा अनर्थ हुआ है, पत्रकारों के साथ कितना बुरा हुआ है। काश, NDTV जेएनयू के देशद्रोही नारों की प्रतिक्रिया में ऐसा करता! क्या देश को बर्बाद और टुकड़े करने की बात करने वाली घटना से अभिव्यक्ति की आजादी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है? या कन्हैया के साथ मारपीट वाली घटना ज्यादा महत्त्वपूर्ण थी? क्या दर्शक यह सब महसूस नहीं कर रहे हैं? तथाकथित प्रगतिवादी एवं तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादी जो देश की बर्बादी से भी बुरी बात किसी अन्य को मानते हों, क्या उनका कृत्य देश की जनता माफ कर देगी?

– रामस्वरूप अग्रवाल